मानव विज्ञान
एक सफर मानव से ईश्वर तक

अशोक 'मानव'

मानव रचना प्रकृति विज्ञान का सर्वोपरी विकास है। मानव रचना में राक्षस, मानव और ईश्वर का निवास होता है। हर ऊर्जा का भण्डार ब्राम्हण में होता है। उसे रोकने के लिए जमीन की जरूरत होती है। मानव प्रकृति की चलती फिरती पिण्डिय जमीन है, जिसमें ऊर्जा आती है और जमीन के गुणों के अनुसार गुण का विकास करती रहती है। मानव स्वरुप में राक्षसी प्रकृति ईश्वरी प्रकृति दोनों की ऊर्जा आती रहती है। जब व्यक्ति राक्षस प्रकृति से प्रभावित होता है तो आपराधिक कार्य करने लगता है और जब ईश्वरीय प्रवृति से प्रभावित होता है तो नेक कार्य करने लगता है। व्यक्ति जो कार्य करता रहता है। अथवा भावनात्मक रूप से सोचता रहता है। वह ऊर्जा बाहर निकलती रहती है और उसी गुण का पदार्थ शरीर में बनता है। जिससे कोशिका का निर्माण होता है। कोशिकायें किसी विषय का निर्णय लेने में मतदान करती है, जिस प्रवृति की कोशिकायें ज्यादा होती है वही निर्णय व्यक्ति लेता है।

मानव जीवन का निर्माण आत्मिक रचना से होता है। आत्मा जल से गैसीय भाग और ब्रह्माण के सभी तत्वों की ऊर्जा के जोड़ से बनता है । जो परमप्रकाश (सूर्या) से आया हुआ जीवप्रकश को रोकता है। यह प्रकाश उसमें तब तक रहता है जब तक आत्मिक रचना का गुण अपना विकास कर खर्च नहीं हो जाता है। आत्मा और जीवप्रकाश के मिलन से शरीर का निर्माण होता है। इस शरीर में मस्तिक जिसमें आँख, कान, नाक, मूँह, तीसरी आँख आज्ञाचक्र और आज्ञाचक्र मण्डल होता है, शरीर के मध्य में आत्मा उसके ऊपर दिल, बाई तरफ पंचन तंत्र और नाभी के नीचे गुर्दा होता है। अन्य अंग इसके सहयोग के लिए बनते है। इनके विकास का गुण आत्मिक रचना के बीज रूप में होता है।जो तीसरे आँख के सहयोग से पूरा होता है। दोनों आँखें सिर्फ पदार्थ स्वरुप को देख पाती है।जो व्यावहारिक जीवन जीने में सहायक होता है पर तीसरी आँख सूक्ष्म रूप को देख पाती है। इसे पता होता है कि आगे आने वाले समय में किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा और किन किन चीजों की आवश्यकता पड़ेगी। उसी अंगों और गुणों का विकास आत्मा के सहयोग से पूरा करती है। तीसरी आँख सूक्ष्म से सूक्ष्म को देख लेती है। इसे पता होता है कि भविष्य में किसकी जरूरत पड़ेगी उसी का निर्माण शरीर में होता है। स्वरुप या ध्यान करने से व्यक्ति इसी सूक्ष्म स्वरुप को दृश्यरूप में देख पाता है। आज्ञाचक्र तीसरी आँख के इशारे पर आदेशित करता है। जिसे करने का भाव व्यक्ति के अन्दर बन जाता है। यह क्रिया आत्मिक रचना के मूल गुणों से प्रभावित होती है जिसका विकास शरीर और गुण के रूप में होता है, जो पूर्व से उसके